Dr. Vinod Baitha
Deptt. of Economics
Maharani college Darbhanga

Economics D.II. Hons

राजकोषीय नीति FISCAL POLICY

राजकोषीय नीति के अन्तर्गत कर-निर्धारण, सार्वजनिक व्यय तथा सार्वजनिक ऋण की
उन क्रियाओं का विवेचन करते हैं, जिनके द्वारा सरकार पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति
करती है। सामान्य रूप से सरकार के आय-व्यय से संबंधित नीति को राजकोषीय नीति
कहा जाता है जिसके अन्तर्गत कर, राजस्व में वृद्धि, लोकहित में कार्य, लोकहित में सार्व-
जनिक व्यय तथा सार्वजनिक ऋणों के प्रबंध को सम्मिलित किया जाता है। व्यापक
रूप से सरकार का आय तथा व्ययों से संबंधित नीति को राजकोषीय नीति कहा जाता है।
राजकोषीय नीति की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

1. श्रीमती हिक्स के अनुसार " राजकोषीय नीति का संबंध उस पद्धति से है जिससे लोकवित्त के
विभिन्न अंग अपने प्राथमिक कर्तव्यों को पूरा करने हेतु सामूहिक रूप से आर्थिक नीति
के उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए प्रयोग में लाए जाते हैं। "

2. आर्थर स्मिथीज Arthur Smithies के अनुसार " राजकोषीय नीति वह नीति है।
जिससे सरकार अपने व्यय तथा आगम के कार्यक्रम को राष्ट्रीय आय, उत्पादन या रोज-
गार पर इच्छित प्रभाव डालने तथा अवांछित प्रभावों को रोकने के लिए प्रयुक्त करती है। "

3. सेमुअलसन के शब्दों में " राजकोषीय नीतियाँ करों तथा सरकारी व्यय के साथ साथ
स्थायी मौद्रिक नीति के साथ सहयोग से कार्य करती हैं। इसका उद्देश्य उच्च रोजगार
और बढ़ती अर्थव्यवस्था होता है। किन्तु इसे प्राप्त करने के लिए कीमत प्रसार के बगैर
ही कार्य चलाते हैं।

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर यह स्पष्ट है कि सार्वजनिक व्यय, करारोपण तथा
बजट निर्माण से संबंधित सरकारी क्रियाओं को राजकोषीय क्रियाएँ कहा जाता है
और जब इन क्रियाओं का उद्देश्य पूर्ण उपयोग, आर्थिक स्थायित्व द्रुतगामी आर्थिक
और पूर्ण रोजगार की प्राप्ति के लिए किया जाता है। अन्य शब्दों में राजकोषीय
नीति का सम्बंध सरकार से जनता और जनता से सरकार की ओर होने वाले
धन प्रवाह से होता है।

राजकोषीय नीति का उद्देश्य स्थिरता के साथ विकास राजकोषीय नीति का सबसे
महत्वपूर्ण उद्देश्य है अकेली मौद्रिक नीति के आधार पर आर्थिक स्थिरता को प्राप्त नहीं
किया जा सकता है। अल्पविकसित देशों में राजकोषीय नीति का उद्देश्य क्रियात्मक वित्त
प्रबंधन तथा क्रियाशील वित्त प्रबंधन की व्यवस्था करना होता है। विकसित देशों में
राजकोषीय नीति का मुख्य उद्देश्य आर्थिक विकास की दर को बनाए रखना होता है।
अल्पविकसित देशों में पूँजी निर्माण की दर को तेज करके आर्थिक विकास के मार्ग पर
आगे बढ़ाना ही इसका मुख्य उद्देश्य होता है।

अल्पविकसित देशों में राजकोषीय नीति का प्रयोग निम्न उद्देश्यों हेतु किया जाता है,
आर्थिक विकास के लिए आवश्यक वित्तीय साधन जुटाना, आंतरिक तथा विदेशी
प्रभावों से कीमत में होने वाले परिवर्तन को नियंत्रित करना और क्रय शक्ति के प्रवाह
को नियंत्रित करना, उपभोग को नियंत्रित करना जिससे आर्थिक साधन उपभोग से
हटाकर विनियोग में लगाया जा सके।

राजकोषीय नीति के विषय में पिछले वर्षों में उदारीकरण की प्रक्रिया में राजकोषीय नीति
के संबंध में कुछ बिन्दु सामने आए हैं जिनपर सरकार भी आज सहमत है। उन सभी
बिन्दुओं को इस प्रकार रखा जा सकता है। कर ढाँचे व कर नियमों के लिए प्रायोजित
प्रयास करना चाहिए। सरकार को ऐसी व्यवस्था के लिए प्रयास करना चाहिए
जिससे प्रमुख करों की दर व्यवहारिक हो तथा इनका प्रशासन व प्रवर्तन प्रभावी

Scanned by CamScanner

जिसे इसके अनुपात में सुधार के ... में स्थापित करना चाहिए। करारोपण में संसाधनों के बटवारे तथा समता का विस्तार को अधिक महत्व देना चाहिए। अर्थव्यवस्था के प्रबन्धन में और विशेषकर राजकोषीय और वित्तीय साधनों पर निर्भरता में वृद्धि करना चाहिए। कर-प्रशासन में सुधार का उपाय करना चाहिए तथा करदाताओं को उत्पीड़न के खतरों से बचाना चाहिए। राजकोषीय व मौद्रिक नीतियों के मध्य अन्तर्सम्बन्धों को भी अधिक महत्व देना चाहिए। सरकारी व्यय पर प्रभावी नियंत्रण के लिए किये जाने वाले उपायों पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

राजकोषीय नीति की विकासशील देशों में विशेष महत्व है और उसकी बड़ी भूमिका होती है।

प्रकार विकासशील देशों में राजकोषीय नीति की भूमिका निम्नलिखित है।

1. पूँजी निर्माण में वृद्धि - विकासशील अर्थव्यवस्था में राजकोषीय नीति का प्रमुख ... पूँजी निर्माण की उच्चतम दर को बढ़ाना है विकासशील देश पूँजी की कमी के कारण फँसे होते हैं इसलिए इस दुश्चक्र को तोड़ने के आधार पर निर्धनता के दुश्चक्र में ... और यह तभी संभव है जबकि के संदर्भ में संतुलित विकास आवश्यक होता है ... सार्वजनिक व्यय के द्वारा उच्च पूँजी निर्माण को प्रोत्साहन किया जाय।

2. साधनों के आवंटन में महत्वपूर्ण — साधनों का आवंटन उन निर्णय से सम्बंध रखता है जो यह बताते हैं कि समाज की भूमि, श्रम व पूँजीगत वस्तुओं का किस प्रकार से प्रयोग किया जाय, किन वस्तुओं का उत्पादन किया जाय और कितनी मात्रा में किया जाय।

3. आय तथा धन की असमानता को कम करने में सहायक — विकासशील देशों में न केवल राष्ट्रीय आय की वृद्धि की समस्या है बल्कि आय तथा धन के वितरण की असमानता को कम करने की भी समस्या है। सरकार सार्वजनिक आय तथा व्यय के समायोजन कार्य द्वारा आय और धन की असमानता को न्यूनतम कर सकती है। परन्तु यह कार्य अधिकतम आर्थिक विकास का विरोधी है। क्योंकि सामाजिक असमानता में ही आर्थिक सम्पत्ति संग्रह, बचत एवं निवेश होता है। सरकार की राजकोषीय नीति इन दो विरोधी कार्यों में सामंजस्य स्थापित करने में अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

4. आर्थिक विकास में उपयोगी — राजकोषीय नीति आर्थिक विकास को तीव्रतर में काफी महत्वपूर्ण है। आर्थिक विकास में लोगों के रहन-सहन का स्तर में आवश्यक सुधार होता है। सरकार अपनी कर नीति सार्वजनिक व्यय एवं सार्वजनिक ऋण की नीति द्वारा बचत विनियोग को प्रोत्साहन दे सकती है।

5. रोजगार के अवसरों की वृद्धि में सहायक — विकासशील देश में पूर्ण रोजगार की स्थिति नहीं होती, विद्यमान श्रम शक्ति को रोजगार के अवसर प्रदान किये बिना आर्थिक विकास का लक्ष्य पूरा नहीं किया जा सकता। रोजगार में वृद्धि के लिए राजकोषीय नीति का काफी महत्व है।

6. क्षेत्रिय असंतुलन को दूर करने में महत्वपूर्ण — अर्द्धविकसीत देशों में राजकोषीय नीति की देश के सभी भागों में संतुलित विकास करने में सराहनीय भूमिका है।

इस प्रकार राजकोषीय नीति की भूमिका अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है।

Scanned by CamScanner

अर्द्धविकसित अर्थव्यवस्था में राजकोषीय नीति की कठिनाइयाँ और सीमाएँ —
यद्यपि अर्द्धविकसित राष्ट्रों में आर्थिक विकास के कार्यक्रम राजकोषीय नीति का एक महत्वपूर्ण स्थान है। परन्तु राजकोषीय नीति को कमजोर बनाने में अनेक तत्व सक्रिय रहते हैं जो निम्नलिखित हैं।

1. उपयुक्त परिस्थितियों का अभाव — अर्द्धविकसित राष्ट्रों में आधुनिक और अच्छी और लोचपूर्ण कर प्रणाली के लिए उपयुक्त परिस्थितियाँ उपलब्ध नहीं होती है जिसके कारण राजकोषीय नीति प्रभावपूर्ण नहीं हो पाती है।

2. अमौद्रिक क्षेत्र — विकासशील अर्थव्यवस्था का एक बहुत बड़ा क्षेत्र अमौद्रिक होता है इसके परिणाम स्वरूप जिन राजकोषीय उपायों को अपनाया जाता है। उसका प्रभाव सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था पर अपेक्षित मात्रा में नहीं पड़ता है।

3. अपर्याप्त सांख्यिकी सूचनाएँ — विकासशील देशों में आय व्यय, रोजगार, बचत विनियोग आदि के बारे में विश्वसनीय एवं पर्याप्त मात्रा में सांख्यिकी सूचनाएँ उपलब्ध नहीं हो पाता है।

4. अशिक्षा - विकासशील देशों अधिकांश लोग अशिक्षित होते हैं और वे राजकोषीय नीति के महत्व के बारे में समझने में असमर्थ होते हैं। और राजकोषीय नीति की पूरी जानकारी नहीं होती है

5. उत्तरदायित्व का अभाव — विकासशील देशों में देशवासी विकास के कार्यक्रमों में अपने उत्तरदायित्व को महसूस नहीं करते हैं फलतः यहाँ लोग व्यापक पैमाने पर करों की चोरी करते हैं। जिसका प्रभाव राजकोषीय नीति पर व्यापक रूप से पड़ता है और राजकोषीय नीति मजबूत नहीं हो पाती है।

6. राष्ट्रहित की अवहेलना — जिन विकासशील देशों में प्रशासन भ्रष्ट होता है जो राष्ट्रीय हित को महत्व नहीं देते। फलतः वे राजकोषीय नीति को ईमानदारी और प्रभावपूर्ण ढंग से लागू करने में पूर्णतया असमर्थ सिद्ध होते हैं।

इस प्रकार राजकोषीय नीति जिस देश की अच्छी होती है वह देश अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाए रखता है और जिन देशों की राजकोषीय नीति प्रभावपूर्ण ढंग से लागू नहीं होती है उस देश की अर्थव्यवस्था, विकास, आदि कमजोर रहता है। इस प्रकार राजकोषीय नीति की कठिनाईयों का निवारण भी हो जाए तो हमें राजकोषीय नीति की सीमाओं को नहीं भूलना चाहिए तथा राष्ट्रीय हित में राजकोषीय नीति का पालन करना चाहिए जिससे अर्थव्यवस्था मजबूत हो और देश का विकास हो।

इस प्रकार राजकोषीय नीति अनेक सीमाएँ हैं जो निम्नलिखित हैं,

1. सामान्यतः बजट देश की राष्ट्रीय आय का सामान्यतः एक बहुत छोटा भाग होता है अतः बजट संबंधी नीति पूर्ण अर्थव्यवस्था में कोई ज्यादा महत्व नहीं डाल सकती। P.T.O

Scanned by CamScanner

2 अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के मध्य महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं डाल सकती
3. सरकारी योजनाएँ भी शीघ्र ही नहीं बदली जा सकती।
4 प्रशुल्क नीति एक दोधारी तलवार है यदि थोड़ी सी भी सरकारी व्यय की दिशा में गलत हुई तो यानी स्फीति बढ़ जाएगी या मंदी आ जाएगी।
लोक सभा के सदस्य साधारणतया करों को घटाने पर जोर देते हैं तथा के व्यय के बजट का विरोध करते हैं। यह बहुत बड़ी बाधा है

इस प्रकार राजकोषीय नीति किसी भी देश के लिए महत्वपूर्ण नीति होती है राजकोषीय नीति को सरकार द्वारा प्रभावपूर्ण तरीके से लागु किया जाना चाहिए। देश के सम्पूर्ण शिक्षित एवं अशिक्षित नागरिकों को राजकोषीय नीति का सम्भाव करना चाहिए। इससे देश समृद्धि की ओर अग्रसर होता है देश की अर्थव्यवस्था मजबुत होती है

Scanned by CamScanner